'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 23 अंक 14 4 अक्टूबर, 2019 कुल पृष्ठ: 8 एक प्रति: रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

टेपू शिविर में प्रातःकालीन क्रीड़ा का दृश्य।

शिविरों की शृंखला में जुड़ी सात और कड़ियां

श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य सृजन का कार्य है जिसमें प्रशिक्षण व अभ्यास का सर्वाधिक महत्व है और शाखा व शिविर इसके सर्वाधिक महत्वपूर्ण माध्यम हैं। समाज की युवाशक्ति को संस्कारित बनाने तथा उसे समाज, राष्ट्र व मानवता की सेवा में नियोजित करने के पवित्र उद्देश्य के साथ संघ के शिविरों की शृंखला अनवरत रूप से चल रही है।

14 से 22 सितंबर की अवधि में इस शृंखला में सात कड़ियां और जुड़ गईं। जोधपुर संभाग में शेरगढ़ प्रान्त के सेखाला मण्डल के अंतर्गत केतु कलां गांव में चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 19 से 22 सितंबर तक हुआ। संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के संचालन में सम्पन्न शिविर में पंचवटी छात्रावास से तथा केतु, डेरिया, भाळू, देवातु, गोपालसर, बस्तवा, जिनजिनयाला, बेलवा, रावलगढ़, बालेसर, भुंगरा, तेना, खिरजां आदि गांवों के लगभग 184 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर संचालक ने शिविरार्थियों को संघ के उद्देश्य व प्रणाली के बारे में जानकारी दी व बताया कि संघ की साधना ऊर्ध्वगामी साधना है। संसार में व्याप्त जड़ता व तमोगुण से निरंतर संघर्ष इस साधना की अनिवार्य आवश्यकता है। संघ विगत 73 वर्षों से इसी संघर्ष में रत है। अपनी अनूठी सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली से संघ समाज में संस्कार निर्माण में जुटा हुआ है। यह प्राप्ति का नहीं त्याग का मार्ग है इसीलिए सहज ही कोई इसमें प्रवृत्त नहीं होता। किन्तु हमारे शरीर में पूर्वजों का जो रक्त बह रहा है उसकी तासीर हमें यहां खींच लाई है। उस रक्त की हमें लाज रखनी है। अपने पूर्वजों द्वारा सर्वस्व लुटाकर कमाए गए सम्मान और स्वाभिमान की रक्षा करनी है और उसका एकमात्र मार्ग श्री क्षत्रिय युवक संघ है। शिविर के विदाई कार्यक्रम में स्थानीय समाजबंधु भी सम्मिलित हुए। शिविर व्यवस्था में केतु निवासी नाथूसिंह (सरपंच), दशरथसिंह, करण सिंह, दुर्गपाल सिंह आदि ने सहयोग किया। शिविर के दौरान अक्टूबर में जोधपुर में आयोजित होने वाले सात दिवसीय शिविर के बारे में भी चर्चा की गई।

जोधपुर संभाग में ही ओसियां प्रान्त के अंतर्गत ईशरू गांव में भी चार दिवसीय शिविर आयोजित हुआ। 19 से 22 सितंबर तक सम्पन्न इस शिविर में ईशरू, बेदू, बापिणी, सुवाप, कड़वां, भादां, पंचवटी छात्रावास जोधपुर, जाखण, जोधां की ढाणी आदि स्थानों से 225 से अधिक स्वयंसेवक सम्मिलित हुए तथा संघ का प्राथमिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन भैरू सिंह बेलवा ने किया।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

नया जोश और विस्तार की चाह
दुबई शाखा की प्रथम वर्षगांठ

दुबई के मरमूम नामक स्थान पर एक वर्ष पूर्व श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखा प्रारम्भ हुई। 14 सितम्बर को उस शाखा की प्रथम वर्षगांठ पर एक स्नेहमिलन रखा गया जिसमें 125 स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

नियमितता और निरंतरता से सिंचित गहरी जड़ें

बाड़मेर से मल्लीनाथ राजपूत छात्रावास में विगत 60 वर्षों से नियमित व निरन्तर लगने वाली दैनिक शाखा का छायचित्र।

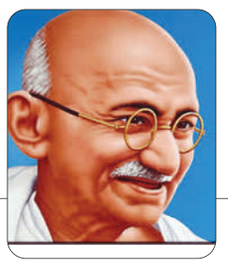

(महात्मा गांधी की 150वीं जयंती विशेष)

अन्याय का प्रतिकार और सत्य का आग्रह

विगत 2 अक्टूबर को सम्पूर्ण राष्ट्र ने महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मनाई। विभिन्न लोग गांधीजी को विभिन्न रूपों में जानते हैं, पहचानते हैं और मानते हैं। कोई उन्हें शांति दूत कहता है तो कोई अहिंसा का पुजारी। कोई करुणा की मूर्ति बताते हैं तो कोई समाज सुधारक। कोई आजादी का अगुआ कहते है तो कोई कुछ और। लेकिन हमारे लिए गांधीजी का अन्याय का प्रतिकारी एवं सत्य का आग्रही स्वरूप वरैण्य है। क्षत्रिय के लिए अन्याय का प्रतिकार करना आवश्यक शर्त है तो सत्य पर अटल रहते हुए असत्य से संघर्ष उसका स्वाभाविक गुण माना जाता है। मोहनदास करमचंद गांधी को गांधीजी बनाने वाला मूल कारण उनका अन्याय का प्रतिकार करना है। विचार कीजिए कि दक्षिण अफ्रीका में निवासरत बैरिस्टर गांधी यदि रंगभेद की अन्यायपूर्ण नीतियों के प्रतिकार के लिए खड़ा नहीं होता तो क्या वह गांधीजी बन पाता। उनका यही प्रतिकार का भाव उन्हें भारत खींच लाया और अंग्रेजों की वैश्विक शक्ति के समक्ष निडरता से खड़ा होने की शक्ति प्रदान कर गया। यही गांधीजी का वह गुण है जो उन्हें हमारे निकट ला खड़ा करता है। अन्याय का प्रतिकार क्षत्रिय का स्वाभाविक गुण रहा है और उसी के बल पर वह जगत का रक्षक बन पाया, धरती का भगवान (ठाकुर) बन पाया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

कोई कार्य प्रणाली बहुत आकर्षक हो सकती है। कोई विचारधारा बहुत प्रभावोत्पादक हो सकती है लेकिन केवल कार्य प्रणाली के आकर्षण या विचारधारा के प्रभाव से किसी को अपना नहीं बनाया जा सकता। अपना बनाने वाली सत्ता शरीर या बुद्धि नहीं होती। कार्यप्रणाली का अपना महत्व है और विचारधारा का भी अपना महत्व है लेकिन इनकी एक सीमा है। उस सीमा के पार जाने पर ये निष्प्रभावी हो जाते हैं। इनका आकर्षण और प्रभाव समाप्त हो जाता है ऐसे में जो सत्ता किसी को अपना माने रखने के लिए मजबूर करती है वह होती है हृदय की सत्ता। इसलिए स्थायी आकर्षण या स्थायी प्रभाव पैदा करने के लिए शरीर और बुद्धि के साथ हृदय को सींचना पड़ता है। पूज्य तनसिंह जी का हृदय इस मामले में अगाध रूप से संपन्न था। उन्होंने जीवन भर अपने साथ आने वाले लोगों को अपने हृदय से सींचा और पत्थरों में भी प्राणों का संचार किया। इस मामले में वे हर छोटी-छोटी बात का ध्यान रखते थे और हर छोटे से छोटे व्यक्ति को अपनी इस संपदा से सराबोर करते रहते थे। ऐसे अनेक उदाहरणों को उद्धृत किया जा सकता है। एक बार एक प्रशिक्षण शिविर की बात है। छोटा शिविर था और छोटे-छोटे विद्यार्थी शिविर में आए थे। 4-5 छोटे-छोटे बच्चे एक थाली में सामूहिक रूप से भोजन कर रहे थे। पूज्य श्री उनके साथ जाकर बैठ गए और छोटे-छोटे ग्रास तोड़कर उन्हें देने लगे। साथ ही स्वयं भी उनके साथ खाने लगे। बच्चे खाना खाकर एक-एक करके उठने लगे। जब सब उठ गए तो पूज्य श्री ने थाली उठाई और साफ करके रख दी। जिन के साथ उन्होंने भोजन किया वे आज भी उस क्षण को याद कर अपने आपको कृतज्ञ महसूस करते हैं। यह एक छोटा सा उदाहरण है उनके द्वारा हृदय से सींचने का। उन्होंने अपने हृदय का रक्तिम सिंदूर अपने साथ आने वाले छोटे-बड़े सहयोगी को अपना आराध्य मानकर चढ़ाया और उसी का परिणाम है कि आज वे उनके पीछे चलने वाले हर साथी के आराध्य बन गए। जब पूज्य ही पुजारी बनकर अपने पुजारी की सेवा करने लगे तो उस पुजारी के लिए वह अविस्मरणीय क्षण होते हैं। ऐसे अविस्मरणीय क्षणों को अपने हृदय में संजोये अनेक पुजारियों ने उनके मिशन को आगे बढ़ाया और आज अगणित बिंदु परस्पर मिलकर एकता की धारा बह रही है।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे....

- अभयसिंह रोडला

(3) बैचलर ऑफ मैनेजमेंट साइंस/स्टडीज (बीएमएस) : यह तीन वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है। इसमें छह सेमेस्टर होते हैं। इस कोर्स का उद्देश्य प्रशिक्षित मैनेजमेंट प्रोफेशनल्स को तैयार करना है। इसमें प्रवेश प्राप्त करने हेतु बारहवीं कक्षा न्यूनतम 50 प्रतिशत अंको से उत्तीर्ण करना आवश्यक है। कुछ संस्थान अपने स्तर पर प्रवेश परीक्षा भी आयोजित करते हैं जिसके माध्यम से अभ्यर्थी प्रवेश पा सकते हैं। बीएमएस कोर्स की उपलब्धता वाले कुछ प्रमुख संस्थान निम्नलिखित हैं.

- निम्स यूनिवर्सिटी, जयपुर
- आजाद डिग्री कॉलेज, लखनऊ
- सेंट फ्रांसिस महिला कॉलेज, हैदराबाद
- आदर्श कॉलेज ऑफआर्ट्स एंड कॉमर्स, ठाणे

बीएमएस के पश्चात एमएमएस अर्थात मास्टर्स इन मैनेजमेंट और पीएचडी का विकल्प भी उपलब्ध है।

(4) बैचलर ऑफ फाइन आर्ट्स (बीएफए) : यह तीन अथवा चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम है जिसके अंतर्गत ललित कलाओं (Visual and Performing Arts) का अध्ययन किया जाता है। इसमें पेंटिंग, वास्तुकला, फोटोग्राफी, एनीमेशन, नृत्य, संगीत जैसे विषयों का अध्ययन किया जाता है। कलाकार के रूप में कैरियर बनाने की इच्छा रखने वाले अभ्यर्थियों हेतु यह अच्छा विकल्प है। इसमें प्रवेश हेतु न्यूनतम योग्यता बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण होना है। यद्यपि कुछ संस्थान न्यूनतम प्राप्तांको तथा प्रवेश परीक्षा के आधार पर भी प्रवेश देते हैं। इसके दो भाग हैं-

(i) Foundation : इसमें दो सेमेस्टर होते हैं।
(ii) Specialasation : इसमें छह सेमेस्टर होते हैं।

यद्यपि कुछ विषयों में Foundation की आवश्यकता नहीं होती।
देश में बीएफए कोर्स उपलब्ध करवाने वाले कुछ प्रमुख संस्थान निम्नलिखित हैं-

- रबिन्द्र भारती यूनिवर्सिटी, कोलकाता
- कॉलेज ऑफ आर्ट्स, दिल्ली यूनिवर्सिटी
- बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी
- एमिटी यूनिवर्सिटी, नोएडा

क्रमशः

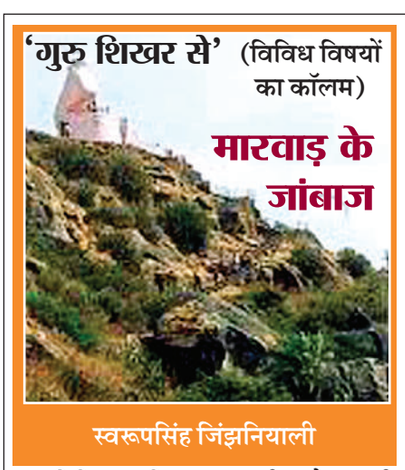

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

ब्रिटिश शासित भारत की अनेक बड़ी रियासतों ने प्रथम विश्वयुद्ध में ब्रिटेन के पक्ष में लड़ने के लिए अपनी सेनाएं भेजी थीं। बीकानेर महाराजा गंगासिंह अपने गंगा रिसाले एवं जोधपुर लांसर्स के साथ मारवाड़ से सरप्रताप युद्ध के मोर्चे पर गए थे। सरप्रताप ने इसी विश्व युद्ध में मिले रिवार्ड से प्रसिद्ध राजपूत स्कूल चौपासनी की जोधपुर में स्थापना की थी। मारवाड़ की रणबंकी राठौड़ी सेना ने युद्ध मोर्चों पर अदम्य साहस दिखाते हुए विरोधियों को शिकस्त दी थी। मेड़ा परगने के दमोई गांव के निवासी भूरसिंह राठौड़ के पुत्र वीरवर गोविन्दसिंह मेड़तिया अश्वरोही रिसाले के सिपाही थे। प्रथम विश्व युद्ध में फ्रांस के क्रोबार्ड रणभूमि में उन्हें तैनात किया गया था। वहां उन्हें घोड़े की पीठ पर सवार होकर संदेशों के आदान-प्रदान का कार्य करना था जो तोपों एवं गोलियों के मध्य बड़ा कठिन कार्य था। उन्होंने तीन बार मौत के मुंह से बचते हुए संदेशों को गन्तव्य तक पहुंचाया। तीनों बार उनके घोड़े मारे गए परन्तु वे मृत्यु को भय दिखाकर अपने मिशन में सफल रहे। उन्हें ब्रिटिश सरकार के सर्वोच्च सम्मान विक्टोरिया क्रास से नवाजा गया एवं अविभाजित पंजाब के मांटशुमारी (अब पाकिस्तान में) जिले की औकाड़ तहसील में नहरी सिचिंत क्षेत्र में भूमि जागीर में दी गई व बहादुर के टाइटल से सम्मानित किया गया। मेजर दलपत सिंह शेखावत देवली जोधपुर के राव राजा कर्नल हरीसिंह जो 'हरजी' के नाम से विख्यात थे, के पुत्र थे। उन्होंने इंग्लैण्ड में शिक्षा ग्रहण की और 1912 में जोधपुर की सेना में कमीशन प्राप्त किया। प्रथम विश्व युद्ध में 72 वर्ष के उम्रदराज सर प्रताप युद्ध के मोर्चे पर बीमार हो गए तो उन्होंने जोधपुर लांसर्स की कमान अपने पुत्रवत मेजर दलपतसिंह को सौंपी। मेजर के नेतृत्व में मारवाड़ी सैनिकों ने समुद्रतल से 1200 फीट नीची जोर्डन की खतरनाक दुर्गम घाटी को घोड़ों की पीठ पर बैठकर पार करते हुए वर्तमान इजराइल के हाइफा शहर के किले को तुर्की सेना की गोलियों की बौछारों के मध्य फतह किया। यहां अदम्य साहस एवं रण कौशल दिखाते हुए मेजर दलपतसिंह युद्ध में काम आए। उन्हें मिल्ट्री क्रास से पुरस्कृत किया गया। सरप्रताप ने अपने इस बहादुर अफसर की याद में दलपत मैमोरियल भवन बनाकर भेंट किया जो जोधपुर में गांधी अस्पताल के पास सरप्रताप स्कूल में स्थित है। वर्तमान का जोधपुर का बांगड़ इंजीनियरिंग कॉलेज कभी मेजर का महल हुआ करता था। उनकी यादों को आज भी कॉलेज के कार्यालय में संग्रहित कर रखा गया है। ब्रिटिश सरकार ने लन्दन के रॉयल आर्ट गैलेरी में मेजर दलपतसिंह की स्टेच्यु स्थापित की है। ब्रिटिश सरकार ने प्रथम विश्व युद्ध में मारे गए सैनिकों की याद में वार मैमोरियल के रूप में दिल्ली में इण्डिया गेट का निर्माण किया जहां उन सभी सैनिकों के नाम उत्कीर्ण हैं। लन्दन के मूर्तिकार लियोनार्ड जिंगिगज ने 1922 में एक नायाब मूर्ति का निर्माण किया जो दिल्ली के लुटियन में तीन मूर्ति चौराहे पर स्थित है। इन तीन मूर्तियों में एक मूर्ति जोधपुर लांसर्स के जांबाज मेजर दलपतसिंह की बहादुरी की याद दिलाती है। अन्य दो मूर्तियां मैसूर लांसर्स के नारायण राव ढागा व हैदराबाद लांसर्स के सैय्यद अब्दुल हुसैन की है। इन्हीं तीन मूर्तियों के स्मारक चौराहे के कारण सड़कें तीन मूर्ति लेन एवं सामने की कोठी 'भारत के पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का निवास' तीन मूर्ति भवन (अब नेहरु स्मारक) कहलाता था।

चित्तौड़गढ़ में 'घूमर' का आयोजन

चित्तौड़गढ़ में 16 सितम्बर को महिलाओं द्वारा 'घूमर' कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें परम्परागत परिधान में 300 से अधिक महिलाएं शामिल हुईं। दिव्या कुमारी हमीरगढ़ के मुख्य आतिथ्य एवं जौहर क्षत्राणी संस्था की सुशीला कंवर आक्या की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में महिलाओं ने परम्परागत पहनावा, रीतिरिवाजों को बढ़ावा देने में तथा कुरीतियों को मिटाने में महिलाओं की भूमिका पर चर्चा की। इस आयोजन में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं रखी गईं एवं विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

सोजत में 'मूमल' कार्यक्रम

पाली जिले की समाज की महिलाओं द्वारा सोजत में एक मिलन कार्यक्रम रखा गया। ये महिलाएं एक वाट्सएप समूह 'रायल राजपूताना' के माध्यम से आपस में सम्पर्क में आईं। 24 सितम्बर को आयोजित इस कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं एवं समाज के रीतिरिवाजों, पहनावा आदि के पालन को लेकर चर्चा की गई।

शिविरों की शृंखला में जुड़ी सात और कड़ियां

राजगढ़ (पोकरण)

तनाश्रम (जैसलमेर)

(पृष्ठ एक से लगातार)

उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि विषमय संसार में संघ से मिले अमृत तत्व से अपने आपको सुरक्षित बनाना है। इसके लिए स्वयं को सतत रूप से शाखा व शिविर के माध्यम से संघ से जोड़े रखना होगा। निरन्तर संपर्क और अभ्यास का दूसरा कोई विकल्प नहीं है। प्राप्ति के लिए कीमत चुकानी ही पड़ती है। हमें भी समाज व देश के सौभाग्य की कीमत साधना द्वारा चुकानी है। शिविर की व्यवस्था में गोरख सिंह बापिणी, गोरख सिंह ईशरू, गुलाब सिंह, करणसिंह, कैप्टन कुंभसिंह, भीमसिंह, प्रेमसिंह, कुंभसिंह आदि ने सहयोग दिया।

फलौदी प्रान्त के टेपु गांव में भी इसी अवधि में चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ जिसमें टेपु, टेकरा, धौलिया, बारू, सिहड़ा, जेतेरी, अवाय, आसकन्द्रा, पोकरण, जोधपुर आदि से 200 से अधिक स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। गोविंद सिंह अवाय ने शिविर का संचालन करते हुए शिविरार्थियों से कहा कि संघ का जो शिक्षण हमें मिला है उसे हमें अपने तक ही सीमित न रख कर समाज में आगे से आगे प्रसारित करना है। इसके लिए अपने अपने गांव में शाखाएं प्रारम्भ करें। स्वयं के आचरण को श्रेष्ठ बनाकर हमें समाज में प्रेरणा के केंद्र बनना है। शिविर के दौरान शिविरार्थियों ने गांव में स्थित सती माता हर कंवर तथा वीरवर झुंझार देव नरपतसिंह जी के मंदिर पर जाकर दर्शन किए। भानुसिंह टेपु ने समस्त ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

बालोतरा-सिवाना संभाग के बायतु प्रांत में भी एक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 19 से 22 सितंबर तक आयोजित हुआ। गिड़ा सिसोदिया गांव में सम्पन्न इस शिविर का संचालन मनोहर सिंह सिणेर ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि इन चार दिनों में हमने यहां अनुशासन, ईमानदारी और अपनत्व का वह पाठ पढ़ा है जो अन्यत्र कहीं भी मिलना दुर्लभ है। संघ ने जो बीज हमारे अंतःकरण में बोया है उसके अंकुरण तथा विकास में हमारा सक्रिय सहयोग आवश्यक है। हमने संघदर्शन को अभ्यास द्वारा अपने जीवन में उतारना प्रारम्भ किया है, अतः संसार की दृष्टि हम पर लगी है। संसार हमारे माध्यम से ही संघ को देखेगा, इसीलिए हमें प्रतिपल सावधान रहना होगा कि हमारी किसी भूल से संघ पर उंगली ना उठे। शिविर में गिड़ा, बायतु, दुगार्दास होस्टल बालोतरा, नागाणाराय हॉस्टल बालोतरा, कुंडल शाखा, सिणेर, परेऊ, सिमरखिया, चाबा, चांदेसरा, चिड़िया, नोसर, कालाथल से लगभग 165 युवा उपस्थित रहे। नरपतसिंह गिड़ा, देवी सिंह गिड़ा, विशन सिंह गिड़ा व अन्य ग्रामवासियों ने व्यवस्था में सहयोग किया।

इसी प्रकार पोकरण प्रान्त के राजगढ़ गांव में चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। 19 से 22 सितंबर की अवधि में सम्पन्न इस शिविर का संचालन अमरसिंह रामदेवरा ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि क्षत्रिय का सर्वोपरि कर्त्तव्य तम से युद्ध करना तथा सत की रक्षा करना है। आज के युग में हमारा सर्वप्रथम युद्धक्षेत्र हम स्वयं है। सबसे पहले हमें स्वयं की बुराइयों से संघर्ष करके उन्हें नष्ट करना है। शिविर में राजगढ़, भैंसड़ा, राजमथाई, फलसुण्ड, सांकड़ा, पोकरण आदि स्थानों से 225 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

गुजरात में महेसाणा प्रान्त के डाभला (वसाई) गांव में भी तीन दिवसीय शिविर का आयोजन हुआ। राधाकृष्ण मंदिर के प्रांगण में 14 से 17 सितंबर की अवधि में सम्पन्न इस शिविर में कमाना, वसाई, डाभला, भैंसाना, वालासना, समौ, मोटीचंदुर, सरसव, खटा, अम्बा, डभाड, भवनगढ़, कानेटी आदि गांवों के 125 युवाओं व बालकों ने प्रशिक्षण लिया। शिविर का संचालन करते हुए राजेन्द्र सिंह भैंसाना ने कहा कि हम यहां नवचेतना प्राप्त करने आए हैं। जीवन के वास्तविक अर्थ तथा उद्देश्य को पहचानने की यह साधना है। यदि हम जागृत तथा अनुशासित रहकर इस साधना में प्रवृत्त होते हैं तो हमें अनुभव होगा कि हमारे जीवन को नई दिशा मिल गई है। अनुकूलता का सृजन व प्रतिकूलता का वर्जन हमें इस साधना मार्ग पर दीर्घकाल तक टिके रहने में सक्षम बनाएगा। महेन्द्र सिंह डाभला ने ग्रामवासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। शिविर के दौरान स्नेहमिलन भी आयोजित हुआ जिसमें गांव के समाजबंधु सम्मिलित हुए। इसी प्रकार जैसलमेर शहर स्थित संघ कार्यालय 'तनाश्रम' में एक बाल शिविर का भी आयोजन हुआ। 21 से 22 सितंबर को गिरधर सिंह जोगीदास का गांव के संचालन में सम्पन्न इस शिविर में कक्षा 4 से 8 तक के विद्यार्थी सम्मिलित रहे। शिविर में शहीद पूनमसिंह कॉलोनी शाखा, बाल ध्रुव शाखा, भटियाणी शाखा, वीर विक्रमादित्य शाखा के लगभग 100 बाल स्वयंसेवक सम्मिलित रहे। शिविर संचालक ने बालकों से कहा कि बचपन जीवन को दिशा देने की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। जिस सरलता से एक छोटे पौधे को इच्छित स्थान पर स्थानांतरित किया जा सकता है उस सरलता से किसी विकसित वृक्ष को स्थानांतरित करना संभव नहीं है। उसी प्रकार आपमें अभी विकास की भरपूर संभावनाएं है। उन्हीं संभावनाओं को फलीभूत करने तथा आपको समाज की अमूल्य निधि बनाने के उद्देश्य से संघ आपके पास आया है। पुंजराजसिंह देवड़ा ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला।

गिड़ा (बाड़मेर)

ईशरू (जोधपुर)

संपादकीय

विज्ञान और विश्वास का दुरुपयोग

प्रायः विज्ञान को विश्वास का विरोधी माना जाता है या विश्वास को वैज्ञानिक सोच वैज्ञानिक सोच के प्रसारण में बाधक माना जाता है। वास्तव में व्यक्ति की सोच वैज्ञानिक ही होनी चाहिए। बुद्धि द्वारा तथ्यों की परख कर उसे स्वीकार करना ही वैज्ञानिक सोच कहलाता है। किसी भी काम के हेतु को समझकर उसे अमल में लाना वैज्ञानिक सोच कहलाता है। इस दृष्टिकोण से सोचें तो वैज्ञानिक सोच कोई बुरी नहीं है बल्कि हमें हमारी सोच को वैज्ञानिक ही बनाना चाहिए। दूसरी तरफ जिस विश्वास को विज्ञान का विरोधी माना जाता है वह वास्तव में अंध विश्वास होता है। अंध विश्वास का अर्थ ही बिना जांचे परखे विश्वास कर लेना होता है। परन्तु प्रायः जिस विश्वास का वर्तमान विज्ञान अपनी पहुंच से बाहर होने के कारण समर्थन नहीं करता उसे हम अंधविश्वास कह देते हैं और इस प्रकार विज्ञान और विश्वास एक दूसरे के विरोधी घोषित हो जाते हैं। लेकिन क्या विश्वास के बिना विज्ञान पनप सकता है या ठहर सकता है? हम में से कितने लोगों ने इस बात को अपनी आंखों से देखा है कि चन्द्रमा पर पानी नहीं है। लेकिन वैज्ञानिकों ने इस बात को सिद्ध किया और हमने उनकी सिद्ध की हुई बात पर विश्वास किया। उनमें से कोई कल को यह सिद्ध कर दे कि चन्द्रमा पर पानी है तो उस बात पर विश्वास कर लेंगे क्योंकि विज्ञान की यह विशेषता है कि वह स्वयं ही स्वयं को झूठा सिद्ध करता है। इस प्रकार वास्तव में तो विश्वास विज्ञान का प्रसार करता है और विज्ञान विश्वास का आधार बनता है। इस प्रकार से दोनों एक दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं। तो फिर इनको विरोधी के रूप में क्यों प्रचारित किया जाता है? इसका कारण ढूंढने जाएं तो जानेंगे कि वास्तव में विज्ञान और विश्वास दोनों का दुरूपयोग किया गया और उस दुरूपयोग ने ही दोनों के बीच खाई खड़ी की। जब विश्वास विज्ञान के सहारे को छोड़ देता है तो अंधविश्वास बन जाता है। भारत में पनपे अंधविश्वास इसी का परिणाम है। भारत में एक दौर आया कि आम जनता को शिक्षा से दूर कर दिया गया। श्रुत ज्ञान की परम्परा के कारण प्राचीन ऋषि परम्परा के अवरुद्ध होते ही परम्परा से संग्रहित विज्ञान विस्मृत हो गया। ऐसे में विज्ञान के ज्ञान से रहित व्यवस्थाओं ने विश्वास की परम्परा के आधार पर समाज का संचालन प्रारंभ कर दिया। उनकी स्वयं की अल्पज्ञता को छिपाने के लिए शेष लोगों को येनकेन प्रकारेण शिक्षा से दूर किया गया और इस प्रकार केवल विश्वास के बल पर व्यवस्था का संचालन किया गया जिसका वैज्ञानिक आधार होते हुए भी प्रकट नहीं हुआ। विज्ञान के आधार के अभाव में पनपे विश्वास का दुरुपयोग करते हुए अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु अनेक ऐसी व्यवस्थाएं भी पैदा कर दी जो कालांतर में अंधविश्वास कहलाईं। उदाहरण के रूप में हम व्यक्ति की मृत्यु के बाद कर्मकांड के रूप में की जाने वाली अलग-अलग क्रियाओं को देख सकते हैं। भारतीय जनता सदा से धर्म में विश्वास करती आई है और परमेश्वर की सत्ता को स्वीकार करती है। उसके इस विश्वास का दुरुपयोग करते हुए धर्म के नाम पर अनेक रूढ़ियों का सृजन कर लागू कर दिया गया जिसे आम जनता धर्म से संबद्धता के भ्रम में, धर्म में विश्वास के कारण मानने लगी और इस प्रकार विश्वास के दुरुपयोग का एक लंबा दौर चला जिसने भारतीय वैज्ञानिक सोच का आशातीत रूप से क्षरण किया। दूसरी तरफ विज्ञान का दुरुपयोग है जो हर विश्वास पर प्रश्न उठाकर ही अपने आपको श्रेष्ठ सिद्ध करना चाहता है। पश्चिम से सम्पर्क के बाद वैज्ञानिक सोच के नाम पर हर विश्वास को अंध विश्वास कहकर मजाक बनाया जाने लगा। पश्चिम में पनपा विज्ञान भारतीय विज्ञान की अपेक्षा अति अर्वाचीन (नवीन) था और उस शैशवावस्था के विज्ञान ने अपनी अल्पज्ञता के कारण हर भारतीय विश्वास को अंधविश्वास कहना प्रारम्भ किया जबकि वास्तव में ऐसा नहीं था। भारतीय लोग भी क्यों कि अपनी उन परम्पराओं के वैज्ञानिक आधार में अपरिचित थे इसलिए उनकी बात को स्वीकार कर हीन भावना से ग्रसित हुए। यह विज्ञान का दुरुपयोग था जबकि अपने आपको झूठा सिद्ध करने वाला विज्ञान आज अनेक भारतीय परम्पराओं का वैज्ञानिक आधार प्रस्तुत कर रहा है। यहां कुछ लोगों को विज्ञान द्वारा अपने आपको झूठा सिद्ध करने की बात पर आपत्ति हो सकती है लेकिन यह विज्ञान की आलोचना नहीं बल्कि विशेषता है कि वह अपने आपको ही झूठा सिद्ध करता है। उसकी हर खोज पहले की खोज के कारण पनपी धारणा को अस्वीकृत कर उससे आगे की धारणा प्रस्तुत करती है और पहले वाली को झुठलाती है। विज्ञान के इसी दुरुपयोग का परिणाम है कि देश की लोकसभा का सांसद रह चुका व्यक्ति भारतीय वैज्ञानिकों के श्रेष्ठतम संस्थानों में से एक इसरो के विश्वास का भी मजाक उड़ाता है। ऐसा लगता है जैसे अमुक व्यक्ति वैज्ञानिकों से भी अधिक विज्ञान जानता है। लेकिन वह वास्तव में एक व्यक्ति नहीं है बल्कि एक वृत्ति है जो विज्ञान की आड़ में विज्ञान का दुरुपयोग करते हुए हर भारतीय विश्वास का मजाक उड़ाता है। इस प्रकार हम कहीं विश्वास के दुरुपयोग से ग्रसित है तो कहीं विज्ञान के दुरुपयोग से। जबकि वह विश्वास वास्तव में श्रेष्ठ विश्वास नहीं हो सकता जिसका आधार विज्ञान नहीं बना हो तो दूसरी तरफ विज्ञान विश्वास के अभाव में संकुचित होकर मात्र कुछ वैज्ञानिकों तक सीमित रह जाएगा। इसलिए वास्तव में विज्ञान और विश्वास एक दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि पूरक हैं और यही पूरकता विज्ञान और विश्वास दोनों को पुष्ट करती है। वह तर्क बेमानी है जो श्रद्धा उत्पन्न नहीं करता और वह श्रद्धा श्रद्धा ही नहीं जो तर्क के सहारे स्थापित नहीं होती। इसीलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ श्रद्धा और तर्क, विज्ञान और विश्वास में विरोध की नहीं बल्कि समन्वय के द्वारा एक दूसरे की पुष्टि की बात करता है।

खरी-खरी

मध्यकालीन व्यक्तिवाद की छाया

हमारा पूरा मध्यकाल व्यक्तिगत गुणों की पराकाष्ठा का काल रहा है। वीरता, शौर्य, त्याग, दान, वचनपालन, स्वामिभक्ति आदि व्यक्तिगत गुणों के एक से बढ़कर एक उदाहरण इस काल में मिल जाते हैं। व्यक्तिगत रूप से इन गुणों का होना कोई गलत बात नहीं बल्कि उच्चादर्श हैं जिनकी मिसाल दी जा सकती है। लेकिन जब ये गुण समाज निरपेक्ष हो जाते हैं तो गुण की अपेक्षा अवगुण बन जाते हैं और मध्यकालीन इतिहास में ऐसे भी अनेक उदाहरण हैं जब इन गुणों की पराकाष्ठा ने समाज को अपूरणीय क्षति पहुंचाई और इतिहास के महत्वपूर्ण मोड़ों पर हम मात खा गए। वीरता के गुण ग्राहक नर नाहर वीरता में ही इतने खो गए कि उस वीरता का हेतु ही खो गया। व्यक्तिगत रूप से दानवीर बनने के लिए या व्यक्तिगत रूप से क्षमावान बनने के लिए हुई अविस्मरणीय गलतियां आज भी हर संवेदनशील व्यक्ति को कचोटती हैं। राष्ट्र के दुश्मन को दिए वचन के पालन या राष्ट्र के दुश्मन को स्वामी मानकर उसके लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के व्यक्तिगत संकल्प और उनकी पूर्ति के प्रयासों के उदाहरण भी इस काल में भरे पड़े हैं। व्यक्ति की समाज एवं राष्ट्र पर प्राथमिकता ने अचिन्त्य खेल खेलने वाले खिलाड़ियों को आततायियों का गुलाम बना दिया और उसका खामियाजा संपूर्ण भारतीयता को सदियों तक भोगना पड़ा। आश्चर्य की बात है कि मध्यकाल के निकटतम पूर्ववर्ती काल 'महाभारत काल' में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अपने पूरे जीवन चरित्र में इस व्यक्तिवाद पर विभिन्न तरीकों से चोट की लेकिन उनके ही परवर्ती वंशजों ने उनकी इस सीख को भूलाकर धर्म के मिथ्या मीमांसकों के चक्कर में फंसकर व्यक्तिवादी बन अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारी। व्यक्तिगत मान, अपमान एवं बड़ाई का ऐसा चक्कर चला कि व्यक्तिगत प्रशंसा की चाह में बार-बार आक्रमण करने वाले गौरी को माफ कर दिया या गुजरात के शासक बहादुर शाह को माफ कर दिया गया। व्यक्तिगत बड़ाई, आराम या मिथ्या मान सम्मान के लिए भाई-भाई के खिलाफ खड़ा होता गया। यदि गहराई से सोचें तो इन सबका कारण भगवान श्रीकृष्णोक्त गीता का लोप होना रहा। निष्काम कर्म योग लोप हो गया और वास्तविकता तो यह है कि इसके साथ ही भारतीयता का भी लोप होता गया। लेकिन क्या हम आज तो संभल गए हैं? क्या आज भी मध्यकालीन व्यक्तिवाद की छाया में नहीं जी रहे हैं जिसके कारण हमने अतीत में मात खाई थी। सोशल मीडिया ने इस वृत्ति को और अधिक उभाड़ा है और गाहे बगाहे यह प्रकट होती रहती है। यदि समाज का कोई व्यक्ति कुछ थोड़ा सा भी अच्छा कर देता है तो बधाई संदेशों की ऐसी बाढ़ आ जाती है जैसे कोई अनहोनी हो गई हो या फिर संसार में ऐसा पहली बार हुआ है। कई बार तो इस प्रकार के बधाई संदेशों को पढ़कर आश्चर्य होता है कि यह वही कौम है जहां परिणाम की चिंता किए बिना लोग अपना जीवन तक दे दिया करते थे और आज उसी कौम का कोई सिपाही यदि कोई छोटा सा ढंग का काम कर देता है तो उसके लिए बधाइयों की बाढ़ आ जाती है जैसे किसी तृषित मृग को पानी की कुछ बूंदे नसीब हो गई हों। इसका अर्थ यह नहीं है कि किसी अच्छे काम करने वाले को सराहा नहीं जाना चाहिए या उसे प्रेरित नहीं किया जाना चाहिए या फिर उससे प्रेरणा नहीं ली जानी चाहिए लेकिन उसकी एक सीमा एवं मर्यादित तरीका होना चाहिए। श्रेष्ठ लोग तो अपने साथ चलने वाले के अच्छे काम की उसके मुंह पर बड़ाई करना तो दूर बल्कि ऐसा भी प्रदर्शित नहीं करते कि उसने ही कोई बहुत अच्छा काम किया है बल्कि ऐसा प्रदर्शित करते हैं कि तुम जिस परम्परा से हो, वहां के लोगों के लिए यह सामान्य बात है तथा यह उस परम्परा की ही विशेषता है। तुम्हारी विशेषता यह है कि तुम उस परम्परा के संवाहक हो। लेकिन हम जरा अपने आचरण पर विचार करें। हमारे ही किसी साथी की बढ़ा-चढ़ा कर अतिरंजित बड़ाई कर उसके अंतर में मीठी मीठी गुदगुदी पैदा कर हम उसके चेहते या प्रिय बनने का प्रयास भले ही कर लें लेकिन वह मीठी-मीठी गुदगुदी उसका बेड़ा गर्क करने की जो शुरुआत कर देती है उसके माध्यम बनकर हम उसके पतन में अनायास ही सहायक भी बन जाते हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	05.10.2019 से 08.10.2019 तक	डोरडा (जालोर)।
2.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	05.10.2019 से 08.10.2019 तक	ढेलाना (जोधपुर)। **सम्पर्क सूत्र :** हरिसिंह ढेलाना - 9783622100
3.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	05.10.2019 से 08.10.2019 तक	बामणू (जोधपुर)। जोधपुर-पोकरण मार्ग पर मंडला उतरें वहां से साधन उपलब्ध रहेगा।
4.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	05.10.2019 से 08.10.2019 तक	सिपला (जैसलमेर)। जैसलमेर खुड़ी मार्ग पर स्थित।
5.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	05.10.2019 से 08.10.2019 तक	जैतमाल छात्रावास पादरू (बाड़मेर)। बालोतरा, सिवाणा व सिणधरी से बस उपलब्ध।
6.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	05.10.2019 से 08.10.2019 तक	जाखली (नागौर)।
7.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	05.10.2019 से 08.10.2019 तक	रानियावास, नायला, जयपुर।
8.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	11.10.2019 से 13.10.2019 तक	श्री वैंकटेश्वर मंदिर परिसर मैसूर कर्नाटक कुबेरसिंह 9892087577, बालाजीसिंह 7892463650 देवेद्र प्रताप सिंह 7204047773, अर्जुनसिंह 9590112444
9.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.10.2019 से 22.10.2019 तक	रोडा (बीकानेर)। नोखा से तीन किलोमीटर दूर।
10.	सात दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.10.2019 से 25.10.2019 तक	रानीवाड़ा (जालोर)।
11.	सात दिवसीय प्र.शि. (बालक)	19.10.2019 से 25.10.2019 तक	राव चंपाजी संस्थान शिव (बाड़मेर)। **सम्पर्क सूत्र :** राजेन्द्रसिंह भिंयाड़ (द्वितीय) 9414655723
12.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	20.10.2019 से 23.10.2019 तक	आशापुरा माताजी मंदिर नाडोल (पाली)।
13.	सात दिवसीय प्र.शि. (बालक)	20.10.2019 से 26.10.2019 तक	फलसूंड (जैसलमेर)। पोकरण, शेरगढ़, सांकड़ा व बाड़मेर से बसें उपलब्ध।
14.	सात दिवसीय प्र.शि. (बालक)	20.10.2019 से 26.10.2019 तक	श्री गणपतसिंह का फार्म हाउस, पीपलूण। (सिवाणा, बाड़मेर)
15.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	22.10.2019 से 25.10.2019 तक	आशापुरा माता मंदिर, नाडोल (पाली)।
16.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	22.10.2019 से 25.10.2019 तक	विरात्रा महाविद्यालय, चौहटन। **सम्पर्क सूत्र :** मोहनसिंह देदूसर-9950116125
17.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	22.10.2019 से 25.10.2019 तक	मल्लीनाथ छात्रावास, देवीकोट (जैसलमेर)।
18.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालिका)	22.10.2019 से 25.10.2019 तक	नारायण निकेतन **बीकानेर।**
19.	चार दिवसीय प्र.शि. (बालक)	22.10.2019 से 25.10.2019 तक	सेमारी (उदयपुर)। **सम्पर्क सूत्र :** डूंगरसिंह भीमपुर-9829738898 कर्नल केसरसिंह-8107806119
20.	चार दिवसीय प्र.शि.	22.10.2019 से 25.10.2019 तक	फेफाना, (हनुमानगढ़)। नोहर-सिरसा रूट पर स्थित। **सम्पर्क सूत्र :** एडवोकेट महेशसिंह : 8302892290 अंकितसिंह फेफाना 7689931964

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं
हमारे प्रिय
भीमसिंह
पुत्र अजीतसिंह भाटी (हरसाणी)
का भारतीय थल सेना में चयन होने पर
हार्दिक बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं
शुभेच्छु : **अजीतसिंह,** हरसाणी-बाड़मेर।
हाल-सूरत। मो. 9426866276

परमवीर डिफेन्स एकेडमी
सैन्य सेवाओं को समर्पित संस्थान
आर्मी नेवी
एयरफोर्स SSC-GD NDA/CDS
भाटी भवन, महिला पुलिस थाने के सामने, रातानाडा
जोधपुर 9166119493

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

अलख नयन
आई हॉस्पिटल

Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

प्रश्न समाज के उत्तर गीता से

प्रश्न 5:- धर्म का लक्ष्य क्या है ?

उत्तर :- धर्म का लक्ष्य है लोक में समृद्धि और परमश्रेय की प्राप्ति। जीवन जन्म और मृत्यु के बीच एक पड़ाव है। मृत्यु के पश्चात् कोई पुनः लौटकर अपना घर या अपनी व्यवस्थाओं को नहीं देख पाता। गीता कहती है- स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्। (18/62) तुम उस निवास को पा जाओगे जो अजर-अमर है। तुम रहोगे, तुम्हारा जीवन रहेगा, तुम्हारा धाम हमेशा-हमेशा के लिए रहेगा। गीता सदा रहने वाली समृद्धि, शान्ति और जिस परमात्मा के आप अंश है उस अंशी परमपिता परमात्मा का दर्शन, स्पर्श और उसमें विलय दिलाती है। यह विडम्बना ही है कि हम उससे मांगते हैं जिसके पास नहीं है। जिसके पास है ही नहीं, वह कहां से दे देगा? हम किसी फलदार वृक्ष से मौसम में फल मांगेंगे तो वह अवश्य देगा; किन्तु हम उससे मुक्ति या भक्ति मांगे तो वह कहां से दे देगा?

प्रश्न 6. धार्मिक विकृतियों का कारण क्या है ?

उत्तर:- इन विकृतियों का कारण केवल शास्त्र का विस्मृत हो जाना, उसकी अवहेलना और उस पर अनर्गल प्रतिबंधों का लगना है। गीता धर्मशास्त्र के रूप में प्रतिष्ठित होते ही स्पष्ट हो जायेगा कि मानव एक परमात्मा की संतान हैं। परमधर्म परमात्मा ही एकमात्र शाश्वत सत्य है, वही नित्यतत्त्व है। उसे धारण करना धर्म है। उसे धारण करने की विधि, संपूर्ण साधना पद्धति गीता है। गीता मनुष्य-मनुष्य में ऊंच-नीच की दरार नहीं डालती। गीतोक्त धर्म मनुष्यों के हृदय में जो दुःखों का कारण है उसका निवारण तथा सहज सुख की प्राप्ति का साधन है।

गीता का पहला ही श्लोक है-

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय॥1/1

'धर्म' एक क्षेत्र है तथा 'कुरु' एक क्षेत्र है। वस्तुतः वह क्षेत्र कहां है? वह युद्ध कहां हुआ? क्षेत्रज्ञ कौन है? गीताकार स्वयं स्पष्ट करते हैं-

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते। (13/1)

अर्जुन! यह शरीर ही एक क्षेत्र है। इसमें बोया हुआ भला-बुरा बीज संस्काररूप में उगता है। शुभ या अशुभ अनन्त योनियों का कारण भी यही है। जो इसका पार पा लेता है वह क्षेत्रज्ञ है। वह इस क्षेत्र में फंसा नहीं बल्कि इसका रक्षक है, इससे उद्धार कराने वाला क्षेत्रज्ञ है। अर्जुन! सभी शरीरों में मैं क्षेत्रज्ञ हूं और जो इसे जान लेता है वह भी क्षेत्रज्ञ है। स्पष्ट है कि श्रीकृष्ण एक महायोगेश्वर पूर्ण सद्गुरु हैं। शरीर एक क्षेत्र है। इसमें लड़ने वाली प्रवृत्तियां दो हैं- धर्मक्षेत्र और कुरूक्षेत्र। एक परमधर्म परमात्मा जो शाश्वत है, अनादि है, सदा है उसे धारण करने की विधि और दूसरा है कुरु अर्थात् करो, करते ही रहो, सदा प्रवृत्त रहो; चलते रहो पहुंचोगे कहीं नहीं, चाल कभी नहीं रुकेगी। इसका नाम है प्रवृत्ति मार्ग। जिसमें अज्ञानरूपी धृतराष्ट्र है, गो अर्थात् इन्द्रियों के आधारवाली दृष्टि (गांधारी) से जिसका गठन होता है। अज्ञान से प्रेरित मोहरूपी दुर्योधन, दुर्बुद्धिरूपी दुःशासन, विजातीय कर्मरूपी कर्ण, भ्रमरूपी भीष्म, द्वैत का आचरणरूपी द्रोणाचार्य, संशयरूपी शकुनि- इस प्रकार आसुरी सम्पद् अनन्त हैं फिर भी इन्हें ग्यारह अक्षौहिणी कहा गया। दस इन्द्रियां और एक मनसहित इन्द्रियमयी दृष्टि से जिसका गठन है, वह है कुरुक्षेत्र, प्रवृत्ति मार्ग, आसुरी सम्पद्, विजातीय सम्पद्, जिन पर हमें विजय पाना है।

इसी अंतःकरण में एक दूसरी प्रवृत्ति भी है धर्मक्षेत्र। परम शाश्वत, सनातन, अव्यक्त, व्याप्त, काल से अतीत एकमात्र परमतत्त्व परमात्मा है। उसे धारण करना धर्म है। धर्मक्षेत्र में कर्त्तव्यरूपी कुन्ती, पुण्यरूपी पाण्डु हैं। पुण्य की जागृति होने से पूर्व मनुष्य कर्त्तव्य समझकर जो कुछ करता है, अपनी समझ से वह ठीक ही करता है लेकिन वह हो जाता है विजातीय सम्पद्। वह अंधकार में चलाया हुआ तीर होता है। पाण्डु से संसर्ग होने से पूर्व कुंती ने जो कुछ अर्जित किया, वह था कर्ण। पाण्डवों का सबसे दुर्धर्ष, निरन्तर का वैरी कोई था तो कर्ण. जबकि था सगा भाई। अनजाने में धर्म समझकर कुछ भी कर बैठना धर्म नहीं हो जाता। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि, अर्जुन! अविवेकियों की बुद्धि अनन्त शाखाओं वाली होती है इसलिए धर्म के नाम पर वे अनन्त क्रियाओं की रचना कर लेते हैं। दिखावटी शोभायुक्त वाणी में उसे व्यक्त भी करते हैं कि स्वर्ग ही सर्वोपरि लक्ष्य है। उनके वाणी की छाप जिन-जिन के चित्त पर पड़ जाती है उनकी भी बुद्धि नष्ट हो जाती है, न कि वे कुछ पाते हैं।

पुरुष श्रद्धामय है। कहीं न कहीं उसकी श्रद्धा होगी ही; किन्तु कामनाओं से ग्रसित अविवेकपूर्ण बुद्धि अनन्त क्रियाओं की संरचना कर लेती है इसीलिए पुण्य जागृत होने से पूर्व मनुष्य कर्त्तव्य समझकर जो कुछ भी करता है अपनी समझ से कर्म ही करता है किन्तु है विजातीय कर्म, आसुरी सम्पद् का एक अंग। जहां पुण्यरूपी पाण्डु से संसर्ग हुआ, धर्मरूपी युधिष्ठिर का आविर्भाव हो जाता है। युधिष्ठिर को अजातशत्रु कहा जाता था; क्योंकि ईश्वर-पथ में आरम्भ का नाश नहीं होता। भजन जागृत हो गया तो भगवान के संरक्षण में चलता है। प्रकृति में इतनी शक्ति नहीं है कि भगवान के हाथ से आपको छीन ले और अधोगति में फेंक दे। भगवान होने ही नहीं देंगे-

करउं सदा तिन्ह के रखवारी।
जिमि बालक राखइ महतारी॥
-रामचरित मानस (3/42/3)

इस प्रकार धर्मरूपी युधिष्ठिर (जो शाश्वत सत्य तत्त्व है उसे धारण करने की जागृति), भावरूपी भीम, भावे विद्यते देवा।- भाव में वह क्षमता है कि परमदेव परमात्मा विदित हो जाता है, अनुरागरूपी अर्जुन, इष्ट के अनुरूप लगाव अनुराग है। सृष्टि में लगाव राग कहलाता है, इष्ट में लगाव अनुराग है। **''मम गुन गावत पुलक सरीरा। गदगद गिरा नयन बह नीरा॥'' (मानस, 3/15/6)** यह अनुरागी के लक्षण होते हैं। इस परकार अनुरागरूपी अर्जुन, नियमरूपी नकुल, सत्संगरूपी सहदेव, सात्विकतारूपी सात्यकि, काशिराज (कायारूपी काशी में ही वह साम्राज्य है), रथी के रूप में भगवान अर्थात् अन्तरात्मा से जागृत इष्ट सद्गुरु-यह धर्मक्षेत्र है। इनकी संख्या सात अक्षौहिणी कही गयी। ईश्वर-पथ की क्रमोन्नत सात भूमिकाएं हैं। इन भूमिकाओं की दृष्टि से, सत्य एक परमात्मयी दृष्टि से जिसका गठन है वह धर्मक्षेत्र है। ये वृत्तियां भी अनन्त ही हैं। वृत्तियों का प्रवाह ही तो है। जब धर्म की वृत्ति प्रबल होती है तो यह शरीर ही धर्मक्षेत्र बन जाता है।

कुरुक्षेत्र और धर्मक्षेत्र का संघर्ष तब तक चलता है जब तक विजातीय प्रवृत्ति का, आसुरी सम्पद् का अंतिम सदस्य दुर्योधन शान्त नहीं हो जाता। जब दुर्योधन समाप्त हो गया, कुल में कोई नहीं बचा तो अंधा धृतराष्ट्र कुछ देर अवश्य छटपटाया, अंत में उसने भी संन्यास ले लिया, हरि के द्वार पर पहुंचकर चिन्तन करने लगा। इस प्रकार गीता अंतःकरण की दो प्रवृत्तियों का संघर्ष है।

हर मनुष्य या तो प्रकृति-प्रधान है या धर्म-प्रधान है। अज्ञान में भी, अदृश्य रूप से ही सही, किसी न किसी रूप में अपने से उच्चतर सत्ता की शरणस्थली वह अवश्य ढूंढता है। मनुष्य अपूर्ण है, इसे पूर्णत्व प्रदान करना, सदा रहने वाला जीवन और शान्ति प्रदान करना, अभय पद देना- यही गीता का क्रियात्मक साधन है। साधना उन्नत होने पर भगवान कोई कल्पना नहीं रह जाता। आगे-पीछे, सोते-जागते भगवान का वरदहस्त मिलने लगता है। जहां कृपा मिलने लगी, अर्जुन की तरह आपकी आंख खुली, सामने दृश्य प्रकट हुआ, फिर आपको कोई भरमा नहीं सकता। यह प्रत्यक्ष दर्शन है, एक जागृति है और यह जागृति गीता के माध्यम से है। यह आपको अपने विशुद्ध स्वरूप की प्राप्ति कराती है। जन्म-मृत्यु के चक्कर से मुक्ति दिलाकर यह आपको लोक में हर प्रकार की समृद्धि और अभयपद में स्थिति दिलाती है। **(क्रमशः)**

फॉस्फोरस का अत्यधिक सेवन किडनी रोग का कारण

कुछ लोगों में किडनी की बीमारी बिना किसी लक्षण के दबे पांव आती है और कुछ किया जा सके इससे पहले ही सब कुछ खत्म करके चली जाती है। यहां काफी हद तक दोषी हम ही हैं। डायबिटीज को जानने के लिए हम शुगर टेस्ट करते-कराते रहते हैं, ब्लडप्रेशर पर नियमित निगरानी रखी जाती है। गैस के चलते भी छाती में टीस उठे, तो हृदयरोग विशेषज्ञ से संपर्क करते हैं और यह आवश्यक भी है। लेकिन किडनी के मामले में ऐसा नहीं है। अधिकांश लोग न तो किडनी की गड़बडियों से वाकिफ हैं और न ही इस बात से कि किडनी की देखभाल कैसे की जाए? जिसे हम थोड़ी बहुत जानकारी मानते हैं वह मात्र गलत फहमियां होती हैं। मिसाल के तौर पर किडनी में स्टोन की शिकायत होने पर हर कोई यह सलाह देता नजर आता है कि बीयर पीने से स्टोन पेशाब के जरिए बाहर निकल जाते हैं जबकि हकीकत में किडनी रोगियों के लिए बीयर का अधिक मात्रा में सेवन नुकसानदेह होता है। बीयर, सॉफ्ट ड्रिंक्स, दूध-दही इत्यादि में फास्फोरस की मात्रा अधिक होती है। दरअसल, किडनी के किसी रोग से पीडित व्यक्ति जब अधिक मात्रा में उक्त चीजों का सेवन करता है, तो उसके रक्त का फास्फोरस अस्थियों से कैल्शियम को खींचता है, नतीजन अस्थियां कमजोर होने लगती हैं। फास्फोरस की अधिकता से त्वचा में खुजलाहट भी बढ़ जाती है।

नारायणा सुपर स्पेशेलिटी हॉस्पिटल के नेफ्रोलॉजिस्ट डा.सुदीप सिंह सचदेव का कहना है कि हमारे देश के अधिकतम राज्यों के निवासी अन्य कारणों के अलावा कुछ भौगोलिक कारणों से भी किडनी रोगों के प्रति संवेदनशील हैं। समुद्रतटीय यानी कोस्टल एरिया में रहने वाले किडनी रोगों से पीडित होते हैं, इसलिए आज जब खान-पान की आदतों-लाइफ स्टाइल में बदलाव वगैरह के चलते देश में किडनी पीडितों की संख्या दिन-ब दिन बढ़ रही है, तो हमें किडनी की बीमारियों, उनके लक्षणों, इलाज व बचाव इत्यादि के तरीकों को जान लेना आवश्यक है। अलग-अलग लोगों में किडनी रोगों के अलग-अलग लक्षण मिल सकते हैं। कुछ व्यक्तियों में रोग के कोई लक्षण नजर नहीं आते। बहरहाल, किडनी के समस्याग्रस्त होने पर नजर आने वाले कुछ सामान्य लक्षण इस प्रकार हैं पीठ दर्द, मूत्र त्याग के दौरान रक्त का आना, मूत्र की मात्रा और मूत्र त्याग की बारंबरता में बदलाव, खासकर रात के समय, ब्लडप्रेशर का कम ज्यादा होना, शरीर में जहां किडनियां मौजूद हैं वहा दर्द महसूस होना, मूत्र त्याग के दौरान दर्द व जलन महसूस करना, आंखें, चेहरे, पांव व त्वचा के अन्य हिस्सों में वाटर रिटेंशन यानी जल जमाव के कारण सूजन सी दिखाई देना। **थकान खाकर शाम के समय** डा.सुदीप सिंह सचदेव का कहना है कि एक भी किडनी स्वस्थ हो, तो हमारी विभिन्न शारीरिक क्रियाएं कमोबेश सुचारू रूप से चलती रहती हैं, फिर भी किडनी के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। किसी भी तरह की गड़बड़ी के कारण लक्षण नजर आने पर तत्काल इलाज जरूरी है, अन्यथा रोग बड़ी तेजी से बढ़ता है और दोनों ही किडनियों को खराब कर देता है।

उमेश कुमार सिंह

ले. जनरल अनिल चौहान (UYSM, AVSM, SM, VSM)
जनरल ऑफिसर कमाण्डिंग इन चीफ पूर्वी कमान

ले. जनरल अनिल चौहान सुपुत्र श्रीमती पद्मा और सुरेन्द्रसिंह पौडी गढवाल के रिवर्सू ब्लाक स्थित ग्वाणां गांव के मूल निवासी हैं। वर्तमान में आपका परिवार देहरादून के बसंत विहार में निवास करता है। आपने प्राथमिक शिक्षा दिल्ली से और 11वीं तक की पढ़ाई कोलकत्ता के फोर्ट विलियम्स स्कूल से की। आपके माता-पिता चाहते थे कि बेटा इंजीनियर बने लेकिन सेना के प्रति उनका जुनून था कि प्रथम प्रयास में ही आपका एनडीए के लिए चयन हो गया। 13 जून 1981 को आपको 11 गोरखा राइफल्स में कमिशन प्रदान किया गया। सेना में अनेक महत्वपूर्ण पदों पर रहते हुए आपने उग्रवाद के खिलाफ अभियानों का खासा अनुभव प्राप्त किया है। आप अंगोला में संयुक्त राष्ट्र शांति वाहिनी मिशन में सैन्य पर्यवेक्षक भी रह चुके हैं। जी.ओ.सी.इन.सी पूर्वी कमान का पदभार आपने 31 अगस्त 2019 को संभाला। इससे पूर्व सेना मुख्यालय में महानिदेशक मिलिट्री ऑपरेशन्स के पद पर रहने का गौरव भी हासिल किया। जनरल चौहान को उत्तम युद्ध सेना मैडल, अति विशिष्ट सेवा मेडल, सेना मेडल और विशिष्ट सेवा मेडल से नवाजा जा चुका है। आपने परमाणु हमले और उसके परिणाम पर आधारित एक पुस्तक का भी लेखन किया है।

- कर्नल हिम्मतसिंह पीह

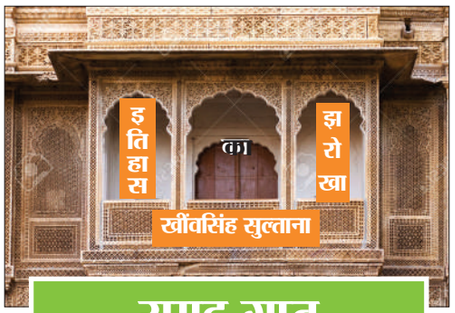

समुद्र गुप्त

आटविक राज्यों को गुप्त साम्राज्य में मिलाने के बाद समुद्रगुप्त ने सीमावर्ती राज्यों पर विजय प्राप्त कर राष्ट्र की सीमाओं को सुरक्षित रखने का प्रयास किया। प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार उसने पूर्वी, उत्तरी-पूर्वी व पश्चिमी सीमाओं पर स्थित राज्यों समतट (पूर्वी बंगाल), डवाक, कामरूप (आसाम), कर्तृपुर (पंजाब), कूमायूं, गढ़वाल, कतुरियाराज (रूहेल खण्ड) पर विजय प्राप्त की, इन सभी राज्यों ने समुद्र गुप्त की अधीनता स्वीकार कर ली। बंगाल पर विजय से बंगाल के समृद्ध बन्दरगाहों के कारण गुप्त साम्राज्य के विदेशी व्यापार में अत्यधिक वृद्धि हुई, बंगाल विजय ने गुप्त साम्राज्य की समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया। देश के आन्तरिक व सीमावर्ती क्षेत्रों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लेने के बाद समुद्र गुप्त ने विदेशी शक्तियों को श्रीहीन करने के लिए, उन्हें अपने प्रभुत्व में लाने के लिए अभियान प्रारम्भ किया। प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार ये विदेशी शासक समुद्रगुप्त की सेवा में तत्पर रहते थे, विभिन्न उपहारों से उसे प्रसन्न रखने का प्रयास करते रहते थे। अपने-अपने राज्यों में शासन करने के लिए गुप्त साम्राज्य की राजकीय मुद्रा 'गरुड़ मुद्रा' से अंकित राजाज्ञा के लिए सम्राट समुद्र गुप्त से प्रार्थना किया करते थे। ऐसे शासकों में कुषाण शासक किदार जो कि पेशावर का शासक था, शक शासक रूद्रसिंह तृतीय, उत्तरी पश्चिमी भारत की सीमा पर गडहर नरेश, पूर्वी भारत के भुरुण्ड व सिंहल द्वीप (लंका) का मेघवर्ण प्रमुख थे। अपनी विजयों से भारत वर्ष को एक सूत्र में बांधने के बाद भारत के प्राचीन चक्रवर्ती सम्राटों की भांति समुद्र गुप्त ने भी अश्वमेघ यज्ञ किया। जिसका उल्लेख स्कन्दगुप्त के भीतरी लेख व समुद्रगुप्त के 'अश्वमेघ' प्रकार के सिक्कों से मिलता है। अपनी विजयों के परिणाम स्वरूप समुद्र गुप्त ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की जो उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में विन्ध्यपर्वत तक, पूर्व में बंगाल की खाड़ी से पश्चिम में मालवा तक विस्तृत था। अपने विभिन्न युद्धों में समुद्र गुप्त ने अलग-अलग नीतियों का अनुसरण किया जिससे उसकी कूटनीतिज्ञता तथा राजनीतिक सूझ-बूझ का पता चलता है। समुद्र गुप्त ना केवल असाधारण सैनिक योग्यता का स्वामी था वरन् वह उच्च कोटि का विद्वान तथा विद्वानों का संरक्षक भी था। वह महान संगीतज्ञ भी था। प्रयाग प्रशस्ति में समुद्र गुप्त को गान्धर्व विद्या में देवताओं के गुरु तुम्बुरू व नारद को भी लज्जित कर देने वाला बताया गया है। समुद्र गुप्त एक उदार तथा दानशील शासक था, दान देने में उसकी तुलना रघु से की गई है। समुद्र गुप्त एक धर्मनिष्ठ सम्राट था जिसने वैदिक धर्म के अनुसार शासन किया। प्रयास प्रशस्ति में उसे 'धर्म की प्राचीर' बताया गया है। प्रसन्न होने पर वह साक्षात कुबेर था तो क्रोधित होने पर यमराज के समान था। वह एक सर्वगुण सम्पन्न सम्राट था। वह सज्जनों के लिए उदित होते हुए सूर्य के समान था तो दुर्जनों के लिए प्रलय के समान था। प्रयाग प्रशस्ति का यह कथन कि 'विश्व में ऐसा कौनसा गुण है जो उसमें नहीं है।' निःसन्देह समुद्र गुप्त के व्यक्तित्व को प्रमाणित करता है। चाहे किसी भी दृष्टि से देखा जाए समुद्र गुप्त भारत के महानतम सम्राटों में से एक था।

महाराज मुकटसिंह शेखावत संस्थान मौरना की कार्यशाला

प्रतिवर्ष की भांति महाराज मुकटसिंह शेखावत संस्थान मौरना की दो दिवसीय कार्यशाला 14 व 15 सितम्बर को बिजनौर मुख्यालय पर आयोजित की गई। कार्यशाला के तहत विश्वामित्र विद्यालय योजना के अंतर्गत संबद्ध विद्यालयों के शिक्षकों एवं संस्थान के सदस्यों को क्षत्रिय धर्म की मूलभूत मान्यताओं, क्षत्रिय कुल, गोत्राचार व इतिहास के बारे में प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षण में संस्थान के सदस्यों के अलावा महाराज मुकटसिंह शेखावत पब्लिक स्कूल मौरना, महाराज गजानन देवरा हाई स्कूल गोहावर, महारानी लक्ष्मी बाई कन्या विद्यालय सरकथल, महाराज रामसिंह राजावत हाई स्कूल सरकड़ा, महाराज त्रिलोकचंद बैंस पब्लिक स्कूल धुंधली के अध्यापकों ने प्रशिक्षण लिया। कार्यशाला में विषय संबंधी लेख पत्रक, स्मारिका व संस्थान की डायरी पढ़ने के लिए दी गई। कार्यशाला को कोमलसिंह शेखावत, घासीसिंह चौहान, माकृष्ण स्वरूप, डॉ. सुदेश सिंह शेखावत, डॉ. महेन्द्रसिंह चौहान, प्रशांतसिंह मौरना आदि ने संबोधित किया।

शिविर की तैयारी हेतु बैठक

फलौदी प्रांत के बामणु गांव में आगामी 5 से 8 अक्टूबर तक चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर प्रस्तावित है। इस शिविर की तैयारी बाबत गांव के नागाणाराय मंदिर में बैठक रखी गई जिसमें बड़ी संख्या में युवा व बुजुर्ग समाजबंधु शामिल हुए। शिविर स्थल का जायजा लेकर तैयारी बाबत चर्चा की गई। इस अवसर पर युवाओं की विशेष शाखा भी लगाई गई।

(पृष्ठ चार का शेष)

मध्यकालीन... समाज में काम करने वाले लोगों के जन्मदिन पर सोशल मीडिया पर आने वाले शुभकामना संदेशों की बहार को देखकर हर संजीदा व्यक्ति को यह डर लगने लगा है कि कहीं मेरे जन्मदिन का किसी को पता नहीं चल जाए नहीं तो मेरी भी यही हालात होगी। यही सब व्यक्तिवाद के पोषक तत्व हैं, उसके लिए खाद, बीज और पानी है तथा इस व्यक्तिवाद ने हमारी सामाजिकता या भारतीयता को कितनी हानि पहुंचाई है इसका आकलन हम विगत 2000 वर्षों का भारतीय इतिहास पढ़कर कर सकते हैं। व्यक्ति निश्चित रूप से समाज का निर्जीव पूर्जा नहीं है। उसका भी अपना महत्व है लेकिन उसके उस महत्व का प्रतिपादन मर्यादित ढंग से किया जाना चाहिए अन्यथा वह समाज या राष्ट्र की प्रतिद्वंद्वी इकाई बन जाता है और फिर जिसके लिए उसका अस्तित्व तिरोहित हो उसे बड़ा बनना चाहिए वहीं वह संकुचित होकर न्यूनताओं के घेरे में आबद्ध हो जाता है। इसलिए आएं मध्यकालीन व्यक्तिवाद की छाया से बाहर निकलकर भगवान श्री कृष्णोक्त निष्काम कर्मयोग के पथ पर अग्रसर होवें ताकि हम व्याष्टि से समाष्टि और परमेष्टि की यात्रा के पथिक बन सकें।

(पृष्ठ एक का शेष)

अन्याय...

गांधीजी का दूसरा गुण जो हमारे लिए आकर्षक हो सकता है वह है उनका सत्य के प्रति आग्रह जिसे उन्होंने अन्याय के प्रतिकार के लिए साधन रूप में स्वीकार किया। सत्य के प्रति समर्पण ने ही, उसके प्रति अडिग रहने के भाव ने ही हमारे पूर्वजों को अचिन्त्य बलिदानों के लिए प्रेरित किया और वे अपना सर्वस्व लुटा कर जन-जन के पूज्य बन गए और गांधीजी में भी सत्य का आग्रह इसी प्रकार का था। हालांकि उनके तरीके से प्रायः हमारी असहमति प्रकट होती रहती है। लेकिन यहां यह भी विचारणीय है कि शक्तिशाली वैश्विक शक्ति से जिस आसानी से वे अपने इस हथियार से संघर्ष कर पाए शायद उतनी आसानी से परम्परागत संघर्ष संभव नहीं था। खैर यह तर्क-वितर्क का विषय हो सकता है लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं है कि उनका अन्याय का प्रतिकार एवं सत्य के प्रति आग्रह हमारे लिए वरैण्य है। हमारे पूर्वज सदियों से इन मूल्यों पर अपना जीवन न्यौछावर करते रहे हैं और भविष्य में भी यही दो तत्व हमे हमारे क्षत्रियत्व पर आरूढ कर पाएंगे। हालांकि आजादी के बाद पनपे सत्ता प्रतिष्ठान में आए लोगों ने जिस प्रकार गांधीजी को सरकारी साधनों द्वारा स्थापित किया उससे निश्चित रूप से गांधी आम होने की अपेक्षा खास बनते गए, औपचारिक बन गए और आम व्यक्ति के सामान्य व्यवहार की पहुंच से दूर होकर मात्र अध्ययन की सामग्री बन गए। परिणामतः गांधीजी को लेकर अनेक प्रकार की भ्रमणा एवं नासमझ विकसित हुई। हमें इन सब बातों से परे बीसवीं सदी के इस महान नायक से हमारे अनुकूल वृत्तियों को ग्रहण करना चाहिए। उनकी 150वीं जयंती पर उन्हें सादर नमन।

दुबई..

तनसिंह जी द्वारा प्रदत्त क्षात्रधर्म, संस्कृति और इतिहास के दिव्य रस से ओत-प्रोत अमर संदेश के गायन, पठन एवं चर्चा के लिए एवं अभ्यास के लिए उपयुक्त स्थान शाखा का महत्व शाखा प्रमुख लखनपालसिंह भंवराणी द्वारा बताया गया। शिक्षण प्रमुख भोमसिंह गड़ा ने सहगायन के माध्यम से संदेश दिया वहीं विस्तार प्रमुख प्रेमसिंह बालेसर ने तिलक लगाकर स्वागत किया। सभी ने सामूहिक रूप से भोजन किया। संघ की शाखा एवं दुबई राजपूत समाज द्वारा 4 अक्टूबर को आयोज्य रक्तदान शिविर को लेकर चर्चा की गई। पहली बार आए लोगों ने इसे अद्भुत अनुभव बताया एवं दुबई शहर में भी शाखा प्रारम्भ करने का संकल्प लिया।

महेन्द्रसिंह गुजरावास को मातृशोक

श्रीमती मगन कंवर

संघ के केन्द्रीय शाखा कार्यालय प्रभारी महेन्द्रसिंह गुजरावास की माताजी **श्रीमती मगन कंवर** पत्नी स्व. हरिसिंह भाटी का 19 सितम्बर को 92 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवगंत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के लिए हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

होनहार पुलिस अधिकारी विक्रमसिंह का निधन

विक्रमसिंह शेखावत

सीकर जिले के खुड़ी गांव निवासी एवं भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो राजस्थान के होनहार पुलिस इंस्पेक्टर **विक्रमसिंह शेखावत** का 24 सितम्बर को कैंसर की बीमारी से देहावसान हो गया। विक्रमसिंह ने विगत वर्षों में एसीबी द्वारा की गई सभी प्रमुख कार्यवाहियों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई एवं विभाग में अपनी ईमानदार एवं कर्मठ अधिकारी की छवि बनाई। उनके देहावसान पर पुलिस विभाग के सभी बड़े अधिकारियों, मुख्यमंत्री, पूर्व मुख्यमंत्री सहित प्रदेश के गणमान्य लोगों ने शोक प्रकट किया। पथप्रेरक परिवार परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान देने एवं परिवार को इस आघात को सहन करने की हिम्मत देने की प्रार्थना करता है।

सान्निध्य एवं सत्संग

माननीय संघ प्रमुख श्री 26 सितम्बर को स्वामी श्री अड़गड़ानंदजी महाराज का सान्निध्य एवं सत्संग पाने के लिए उनके आश्रम शक्तेषगढ़ (वाराणसी) पहुंचे एवं आध्यात्मिक मार्ग दर्शन प्राप्त किया।

जौहर स्मृति संस्थान कार्यकारिणी की बैठक

जौहर स्मृति संस्थान की कार्यकारिणी की बैठक संस्थान के अध्यक्ष तखतसिंह सोलंकी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में जौहर भवन के गुंबज की मरम्मत, निर्माणाधीन मेहमानों कक्षों की प्रगति की जानकारी दी गई। बेड़च नदी के किनारे धनेत मार्ग पर क्रय की गई साढ़े तीन बीघा भूमि की चारदीवारी निर्माण को लेकर भी निर्णय लिया गया। जौहर चित्र की अष्टधातु की प्रतिमा निर्माण को लेकर भी चर्चा की गई। आगामी जौहर मेले की व्यवस्था बाबत भी चर्चा की गई। शिक्षा के लिए अलग समिति गठन का प्रस्ताव भी रखा गया।

श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन की बैठकों का दौर जारी

जनवरी 2019 में संघ के केन्द्रीय कार्यालय 'संघशक्ति' में हुई राज्य स्तरीय बैठक से प्रारम्भ हुआ श्री क्षात्र पुरूषार्थ फाउंडेशन का सफर निरन्तर गतिमान है। इस माह यह सफर पाली व जोधपुर पहुंचा। 15 सितम्बर की शाम छह बजे पाली जिले के प्रसिद्ध शक्तिपीठ नाडोल में आशापुरा माताजी मंदिर में पाली जिले के समाज बंधुओं की बैठक रखी गई। बैठक में संयोजक यशवर्धनसिंह झेरली ने फाउंडेशन की स्थापना की पृष्ठभूमि एवं उद्देश्यों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि हमें पूर्वजों की भांति आज भी अन्याय का प्रतिकार करना है। संघर्ष से विमुख नहीं होना है लेकिन वर्तमान में संघर्ष के साधन बदल गए हैं। हमे उन युगानुकूल संवैधानिक साधनों को समझना एवं जानना चाहिए तथा उनका उपयोग कर आमजन के लिए काम करते हुए हमारे क्षात्र भाव को पुष्ट करना चाहिए। इसके बाद हुई अनौपचारिक चर्चा में बैठक में उपस्थित समाज बंधुओं ने अपने-अपने सुझाव दिए एवं तहसील स्तर पर बैठकें कर इस संदेश को आगे प्रसारित करने की योजना बनी। अनौपचारिक चर्चा में उम्मेदसिंह, इन्द्रसिंह कानपुरा, परबतसिंह खिंदारागांव, गोविन्दसिंह बिठूड़ा, जितेन्द्रसिंह रायपुर आदि ने अपनी बात कही। इस चर्चा के दौरान ईडब्लूएस आरक्षण, ग्रामोत्थान शिविरों, पालनहार योजना आदि के बारे में भी चर्चा हुई। सभी उपस्थित बंधुओं ने तहसीलवार अलग-अलग बैठ कर अपनी-अपनी तहसील की बैठकों की योजना बनाई। 16 सितम्बर को प्रातः शाखा लगाकर सभी विसर्जित हुए। 16 सितम्बर को प्रातः 11 बजे से अपराह्न 2.30 बजे तक जोधपुर शहर, लूणी, भोपालगढ़ व बिलाड़ा क्षेत्र के समाज बंधुओं की एक बैठक संघ के जोधपुर संभाग के कार्यालय 'तनायन' में रखी गई। प्रार्थना एवं परिचय के बाद उपस्थित बंधुओं को फाउंडेशन की स्थापना की भूमिका की जानकारी दी गई एवं तत्पश्चात संयोजक यशवर्धनसिंह ने उद्देश्यों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उपस्थित बंधुओं को बताया गया कि हमारा संविधान जिन मूल्यों को लेकर बनाया गया है उन मूल्यों को हमारे पूर्वज पीढ़ियों से निभाते आ रहे हैं। उनके आचरण में वे मूल्य स्थापित थे इसलिए हमें आज भी उन मूल्यों के लिए वर्तमान व्यवस्था के अनुरूप कार्य करना चाहिए।

इसके बाद हुई अनौपचारिक चर्चा में सुरेन्द्रसिंह लोड़ता, ज्ञानसिंह बगड़, भरतराज सिंह छापड़ा, कर्नल नारायणसिंह बेलवा, प्रहलादसिंह भाटी, दातारसिंह खारिया, बजरंगसिंह आडसर आदि ने अपनी बात कही। अनौपचारिक चर्चा के दौरान शिक्षा के अधिकार के तहत निजी विद्यालयों में निःशुल्क प्रवेश, आर्थिक आधार पर आरक्षण आदि विषयों के साथ-साथ जोधपुर शहर के विभिन्न क्षेत्रों व लूणी, भोपालगढ़ एवं बिलाड़ा में तहसील स्तरीय बैठकों के बारे में भी योजना बनाई गई। जिला बैठकों के साथ-साथ तहसील वार बैठकों का दौर भी जारी है। 21 सितम्बर को जालोर की सायला तहसील की बैठक सायला के जालंधरनाथ राजपूत छात्रावास में रखी गई। बैठक में तहसील के सभी गांवों के प्रतिनिधि पहुंचे। सभी बंधुओं के समक्ष विस्तार से फाउंडेशन की अवधारणा को स्पष्ट किया गया एवं बताया गया कि हमारे पूर्वज प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा को बनाए रखने के लिए अपना बलिदान दे देते थे। हमें भी हर समाज के व्यक्ति की गरिमा को ध्यान में रखते हुए व्यवहार करना चाहिए। बैठक में मंगलसिंह सिराणा, अजीतसिंह देता, डॉ. गणपतसिंह सराणा, सुरजपालसिंह सिराणा, तेजपाल सिंह निंबलाना आदि ने अपनी बात कही। संचालन गणपतसिंह भंवराणी ने किया। तहसील स्तरीय बैठकों के क्रम में ही 22 सितम्बर पीपाड़ सिटी स्थित राजपूत छात्रावास परिसर में बैठक रखी गई जिसमें क्षेत्र के विभिन्न गांवों से समाज बंधु पहुंचे। यहां भी सभी उपस्थित बंधुओं को फाउंडेशन की स्थापना की पृष्ठभूमि, संघ से संबद्धता एवं उद्देश्यों के बारे में विस्तार से बताया गया। बैठक में हुई चर्चा के दौरान नरेन्द्रसिंह खारिया अनावास, इन्द्रसिंह सालवा खुर्द, भोमसिंह तामड़िया, महेन्द्रसिंह नानण आदि ने विचार रखे। दोनों ही बैठकों में छोटी-छोटी बैठकें कर फाउंडेशन के संदेश को गांव तक ले जाने का कार्यक्रम भी बना।

पाली टीम :
इन्द्रसिंह कानपुरा, अजयपालसिंह गुड़ा पृथ्वीराज, मदनसिंह गुड़ा कलां, गजेन्द्रसिंह हरियामाली, श्रवणसिंह गुड़ा आसकरण, जितेन्द्रसिंह मगरतलाव, राजेन्द्रसिंह बिठौड़ा कलां, देवेन्द्रसिंह बाली, जुझारसिंह देणोक, जितेन्द्रसिंह रायपुर।

जोधपुर टीम :
रविन्द्रसिंह खुड़ियाला, ज्ञानसिंह बगड़, प्रलहादसिंह चामू, पूरणसिंह उखरड़ा, चैनसिंह साथिन, सुरेन्द्रसिंह लोड़ता, रामप्रतापसिंह पाल, चन्द्रवीरसिंह ओसियां, समुंदरसिंह आचीणा, लोकेन्द्रसिंह नगवाड़ा।

नाडोल (पाली)

जोधपुर

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org